प्रमुख सामाजिक-धार्मिक कारण थें।

- भारतीय सैनिकों के साथ असामान व्यवहार, उच्च पदों पर नियुक्त करने से वंचित, यूरोपिय सैनिकों की तुलना में कम वेतन, डाकघर अधिनियम पारित निःशुल्क डाक सेवा की समाप्ति, आदि 1857 के विद्रोह के प्रमुख सैन्य कारण थें।
- चर्बी वाले कारतूस का मुद्दा 1857 के विद्रोह का प्रमुख तत्कालिक कारण बना।

3. 1857 के विद्रोह का आरम्भ :

इतिहासकारों के अनुसार, 1857 के विद्रोह की योजना बिठुर में नाना साहब और अजीमुल्ला खाँ ने तैयार किया था। उनकी योजना के अनुसार, 31 मई 1857, का क्रान्ति के लिए निश्चित किया गया था।

"कमल और रोटी" को 1857 के विद्रोह के प्रतिक के रूप में चुना गया था। बैरकपुर छावनी के एक सिपाही मंगल पाँडे ने 29 मार्च 1857 को चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से मना कर दिया और अपने दो अधिकारीयों लेफ्टिनेंट जनरल ह्यूसन और लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी थी।

10 मई 1857, को मेरठ छावनी की 20 वीं नेटिव इन्फैन्ट्री में चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से मना कर सशस्त्र विद्रोह किया। इसी के साथ 1857 का विद्रोह आरंभ हो गया।

4. 1857 के विद्रोह का प्रसार : 10 मई 1857 को विद्रोही मेरठ में सशस्त्र विद्रोह का ऐलान करने के बाद दिल्ली की ओर रवाना हो गयें थें। और 11 मई 1857 को सुबह में ही दिल्ली पर कब्जा कर लिया। वहाँ पहुँचने के बाद विद्रोहीयों ने तत्कालीन मुगल शासक बहादुर शाह जफर को विद्रोह का नेता तथा भारत का सम्राट घोषित कर दिया। यह विद्रोह कानपुर, लखनऊ, अलीगढ, इलाहाबाद, झाँसी रूहेलखण्ड, ग्वालियर, जगदीशपुर में फैल गया।

- दिल्ली में बहादुर शाह जफर के प्रतिनीधि बख्त खाँ ने इस विद्रोह का नेतृत्व प्रदान किया था।
- कानपुर में इस विद्रोह को नाना साहेब ने नेतृत्व प्रदान किया था। इस दौरान तात्यां तोपें ने नाना साहेब की मदद की थी।
- लखनऊँ में बेगम हज़रत महल ने नेतृत्व किया और अपने अवश्यक पुत्र बिरजिस कादिर को लखनऊँ का नवाब घोषित कर दिया।
- झाँसी में रानी लक्ष्मी बाई ने नेतृत्व किया, इस युद्ध में अंग्रेजी सेना को जनरल ह्यूरोज को ने नेतृत्व प्रदान किया था।